॥ श्रीहरिः ॥ 1033

श्रीदुर्गाचालीसा

एवं

श्रीविन्ध्येश्वरीचालीसा

॥ श्रीहरिः ॥

1033

श्रीदुर्गाचालीसा

और

श्रीविन्ध्येश्वरीचालीसा

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ दुर्गा देव्यै नमः ॥

श्रीदुर्गाचालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी। नमो नमो अंबे दुख हरनी॥
निरंकार है ज्योति तुम्हारी। तिहूँ लोक फैली उजियारी॥
ससि ललाट मुख महा बिसाला। नेत्र लाल भृकुटी बिकराला॥
रूप मातु को अधिक सुहावे। दरस करत जन अति सुख पावे॥

तुम संसार सक्ति लय कीन्हा। पालन हेतु अन्न धन दीन्हा॥
अन्नपूर्णा हुई जग पाला। तुम ही आदि सुंदरी बाला॥
प्रलयकाल सब नासन हारी। तुम गौरी सिव संकर प्यारी॥
सिवजोगी तुम्हरे गुन गावें। ब्रह्मा बिष्णु तुम्हें नित ध्यावें॥
रूप सरस्वति को तुम धारा। दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन्ह उबारा॥
धरा रूप नरसिंह को अंबा। परगट भई फाड़ कर खंबा॥
रच्छा करि प्रहलाद बचायो। हिरनाकुस को स्वर्ग पठायो॥

लछमी रूप धरो जग माहीं। श्री नारायन अंग समाहीं॥
छीर सिंधु में करत बिलासा। दया सिंधु दीजै मन आसा॥
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जाय बखानी॥
मातंगी धूमावति माता। भुवनेस्वरि बगला सुख दाता॥
श्री भैरव तारा जग तारिनि। छिन्नभाल भव दुःख निवारिनि॥
केहरि बाहन सोह भवानी। लांगुर बीर चलत अगवानी॥
कर में खप्पर खड़ग बिराजै। जाको देख काल डर भाजै॥

सोहै अस्त्र और तिरसूला। जाते उठत सत्रु हिय सूला॥
नगरकोट में तुम्ही बिराजत। तिहूँ लोक में डंका बाजत॥
सुंभ निसुंभ दानव तुम मारे। रक्त बीज संखन संहारे॥
महिषासुर नृप अति अभिमानी। जेहि अघ भार मही अकुलानी॥
रूप कराल काली को धारा। सेन सहित तुम तिहि संहारा॥
परी गाढ़ संतन पर जब जब। भई सहाय मातु तुम तब तब॥
अमर पुरी औरों सब लोका। तव महिमा सब रहै असोका॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी। तुम्हें सदा पूजें नरनारी॥
प्रेम भक्ति से जो जस गावै। दुख दारिद्र निकट नहि आवै॥
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई। जन्म मरन ताको छुटि जाई॥
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी। जोग न हो बिन सक्ति तुम्हारी॥
संकर आचारज तप कीन्हो। काम क्रोध जीति सब लीन्हो॥
निसिदिन ध्यान धरो संकर को। काहु काल नहि सुमिरो तुमको॥
सक्ति रूप को मरम न पायो। सक्ति गई तब मन पछितायो॥

सरनागत है कीर्ति बखानी। जय जय जय जगदंब भवानी॥
भई प्रसन्न आदि जगदंबा। दई सक्ति नहि कीन्ह बिलंबा॥
मोको मातु कष्ट अति घेरो। तुम बिन कौन हरे दुख मेरो॥
आसा तृस्ना निपट सतावै। रिपु मूरख मोहि अति डरपावै॥
सत्रु नास कीजै महरानी। सुमिरौं एकचित तुमहि भवानी॥
करौ कृपा हे मातु दयाला। ऋद्धि सिद्धि दे करहु निहाला॥
जब लगि जियौं दयाफल पाऊँ। तुम्हरौ जस मैं सदा सुनाऊँ॥

दुर्गा चालीसा जो कोई गावै। सब सुख भोग परम पद पावै॥
देवीदास सरन निज जानी। करहु कृपा जगदंब भवानी॥

॥ श्रीदुर्गाचालीसा सम्पूर्ण॥

श्रीविन्ध्येश्वरीचालीसा

नमो नमो बिंध्येस्वरी, नमो नमो जगदंब। संत जनों के काज में, करती नहीं बिलंब॥

जय जय जय बिंध्याचल रानी। आदि सक्ति जगबिदित भवानी॥

सिंह बाहिनी जय जगमाता। जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता॥

कष्ट निवारिनि जय जग देवी। जय जय संत असुर सुरसेवी॥

महिमा अमित अपार तुम्हारी। सेष सहस मुख बरनत हारी॥

दीनन के दुख हरत भवानी। नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी॥

सब कर मनसा पुरवत माता। महिमा अमित जगत बिख्याता॥
जो जन ध्यान तुम्हारो लावे। सो तुरतहिं बांछित फल पावे॥
तू ही बैस्नवी तू ही रुद्रानी। तू ही सारदा अरु ब्रह्मानी॥
रमा राधिका स्यामा काली। तू ही मात संतन प्रतिपाली॥
उमा माधवी चंडी ज्वाला। बेगि मोहि पर होहु दयाला॥
तुम ही हिंगलाज महरानी। तुम ही सीतला अरु बिज्ञानी॥

तुम्ही लच्छमी जग सुख दाता। दुर्गा दुर्ग बिनासिनि माता॥
तुम ही जाह्नवी अरु उन्नानी। हेमावती अंबे निरबानी॥
अष्टभुजी बाराहिनि देवा। करत बिस्नु सिव जाकर सेवा॥
चौसट्ठी देबी कल्यानी। गौरि मंगला सब गुन खानी॥
पाटन मुंबा दंत कुमारी। भद्रकाली सुन बिनय हमारी॥
बज्रधारिनी सोक नासिनी। आयु रच्छिनी बिंध्यबासिनी॥

जया और बिजया बैताली। मातु संकटी अरु बिकराली॥
नाम अनंत तुम्हार भवानी। बरनै किमि मानुष अज्ञानी॥
जापर कृपा मातु तव होई। तो वह करै चहै मन जोई॥
कृपा करहु मोपर महारानी। सिध करिये अब यह मम बानी॥
जो नर धरै मातु कर ध्याना। ताकर सदा होय कल्याना॥
बिपति ताहि सपनेहु नहि आवै। जो देबी का जाप करावै॥

जो नर कहे रिन होय अपारा। सो नर पाठ करे सतबारा॥
निःचय रिनमोचन होइ जाई। जो नर पाठ करे मन लाई॥
अस्तुति जो नर पढ़ै पढ़ावै। या जग में सो बहु सुख पावै॥
जाको ब्याधि सतावै भाई। जाप करत सब दूर पराई॥
जो नर अति बंदी महँ होई। बार हजार पाठ कर सोई॥
निःचय बंदी ते छुटि जाई। सत्य बचन मम मानहु भाई॥

जापर जो कुछ संकट होई। निःचय देबिहि सुमिरै सोई॥
जा कहँ पुत्र होय नहि भाई। सो नर या बिधि करै उपाई॥
पाँच बरष सो पाठ करावै। नौरातर महँ बिप्र जिमावै॥
निःचय होहि प्रसन्न भवानी। पुत्र देहि ताकहँ गुन खानी॥
ध्वजा नारियल आन चढ़ावै। बिधि समेत पूजन करवावै॥
नित प्रति पाठ करै मन लाई। प्रेम सहित नहि आन उपाई॥

यह श्री बिंध्याचल चालीसा। रंक पढ़त होवै अवनीसा॥
यह जनि अचरज मानहु भाई। कृपा दृष्टि जापर ह्वै जाई॥
जय जय जय जग मातु भवानी। कृपा करहु मोहि पर जन जानी॥

॥ श्रीविन्ध्येश्वरीचालीसा सम्पूर्ण॥

अथ विन्ध्येश्वरीस्तोत्रम्

निशुम्भशुम्भमर्दिनीं प्रचण्डमुण्डखण्डिनीं वने रणे प्रकाशिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्।
त्रिशूलमुण्डधारिणीं धराविघातहारिणीं गृहे गृहे निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥
दरिद्रदुःखहारिणीं सदा विभूतिकारिणीं वियोगशोकहारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्।
लसत्सुलोललोचनां लतासदम्बरप्रदां कपालशूलधारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥
कराब्जदानदाधरां शिवाशिवां प्रदायिनीं वरावराननां शुभां भजामि विन्ध्यवासिनीम्।
ऋषीन्द्रजामिनीप्रदं त्रिधा स्वरूपधारिणीं जले थले निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥
विशिष्टसृष्टिकारिणीं विशालरूपधारिणीं महोदरे विशालिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्।
पुरन्दरादिसेवितां मुरादिवंशखंडिनीं विशुद्धबुद्धिकारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥

श्रीअम्बाजीकी आरती

जय अंबे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ॥ १ ॥ जय अम्बे०
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ॥ २ ॥ जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै ॥ ३ ॥ जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ ४ ॥ जय अम्बे०
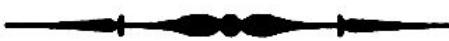
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती॥ ५ ॥ जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥ ६ ॥ जय अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥ ७ ॥ जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥ ८ ॥ जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू॥ ९ ॥ जय अम्बे०

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता ॥ १० ॥ जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ ११ ॥ जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
(श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ॥ १२ ॥ जय अम्बे०
(श्री)अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ १३ ॥ जय अम्बे०

श्रीदेवीजीकी आरती

जगजननी जय! जय!! मा! जगजननी जय! जय!!
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!! जग० जय! जय!!
तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव-सुर-भूपा। १। जग० जय! जय!!
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी। २। जग० जय! जय!!
अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर सँहारकारी। ३। जग० जय! जय!!
तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया। ४। जग० जय! जय!!

राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।५।जग० जय! जय!!
दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव नव रूप धरा।६।जग० जय! जय!!
तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू।७।जग० जय! जय!!
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा।८।जग० जय! जय!!
तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना।९।जग० जय! जय!!

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे।१०। जग० जय! जय!!
शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी।११। जग० जय! जय!!
हम अति दीन दुखी मा! विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।१२। जग० जय! जय!!
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै।१३। जग० जय! जय!!

भगवती दुर्गाके बत्तीस नाम

देवताओंके प्रार्थना करनेपर दयामयी दुर्गा देवीने कहा—मेरे बत्तीस नामोंकी माला सब प्रकारकी आपत्तिका विनाश करनेवाली है। तीनों लोकोंमें इसके समान दूसरी कोई स्तुति नहीं है। यह रहस्यरूप है। इसे बतलाती हूँ, सुनो—

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी। दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी॥
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा। दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला॥
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी। दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता॥
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी। दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी॥
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी। दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी॥

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी। नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः॥
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः॥

जो मनुष्य मुझ दुर्गाकी इस नाममालाका पाठ करता है, वह निःसन्देह सब प्रकारके भयसे मुक्त हो जायगा।

कन्याओंके विवाह-बाधा-निवारण हेतु—

श्रीगौरीजीका पूजन करके निम्न मन्त्रोंमेंसे कोई एक मन्त्र जिसमें रुचि व श्रद्धा लगती हो, ११ माला जप करें तथा उसके बाद

दी हुई गिरिजा-स्तुतिका मनोयोगपूर्वक पाठ करते हुए प्रार्थना करें।

मन्त्र—

(१)

हे गौरि शंकरार्धाङ्गि यथा त्वं शंकरप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्॥

(२)

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्दगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः॥

श्रीगिरिजा-स्तुति

जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी॥
जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता॥

नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना॥
भव भव बिभव पराभव कारिनि। बिस्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि॥

दो०- पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी॥
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे॥
मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबहीं कें॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं॥
बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी॥
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ॥

सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मनकामना तुम्हारी॥
नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा॥
छं०-मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥
सो०-जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥

अथ सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

निशम्यैतज्जामदग्न्यो माहात्म्यं सर्वतोऽधिकम्। स्तोत्रस्य भूयः पप्रच्छ दत्तात्रेयं गुरूत्तमम्॥

भगवंस्त्वन्मुखाम्भोजनिर्गमद्वाक्सुधारसम्। पिबतः श्रोत्रमुखतो वर्धतेऽनुक्षणं तृषा॥

अष्टोत्तरशतं नाम्नां श्रीदेव्या यत्प्रसादतः। कामः सम्प्राप्तवाँल्लोके सौभाग्यं सर्वमोहनम्॥

सौभाग्यविद्यावर्णानामुद्धारो यत्र संस्थितः। तत्समाचक्ष्व भगवन् कृपया मयि सेवके॥

निशम्यैवं भार्गवोक्तिं दत्तात्रेयो दयानिधिः। प्रोवाच भार्गवं रामं मधुराक्षरपूर्वकम्॥

शृणु भार्गव यत्पृष्टं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्। श्रीविद्यावर्णरत्नानां निधानमिव संस्थितम्॥

श्रीदेव्या बहुधा सन्ति नामानि शृणु भार्गव। सहस्त्रशतसंख्यानि पुराणेष्वागमेषु च॥

तेषु सारतरं ह्येतत् सौभाग्याष्टोत्तरात्मकम् यदुवाच शिवः पूर्वं भवान्यै बहुधार्थितः॥

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य भार्गव। ऋषिरुक्तः शिवश्छन्दोऽनुष्टुप् श्रीललिताम्बिका॥
देवता विन्यसेत् कूटत्रयेणावर्त्य सर्वतः। ध्यात्वा सम्पूज्य मनसा स्तोत्रमेतदुदीरयेत्॥

अथ नाममन्त्राः

ॐ कामेश्वरी कामशक्तिः कामसौभाग्यदायिनी। कामरूपा कामकला कामिनी कमलासना॥
कमला कल्पनाहीना कमनीयकलावती। कमलाभारतीसेव्या कल्पिताशेषसंसृतिः॥
अनुत्तरानघानन्ताद्भुतरूपानलोद्भवा। अतिलोकचरित्रातिसुन्दर्यतिशुभप्रदा॥
अघहन्त्र्यतिविस्तारार्चनतुष्टामितप्रभा। एकरूपैकवीरैकनाथैकान्तार्चनप्रिया॥
एकैकभावतुष्टैकरसैकान्तजनप्रिया। एधमानप्रभावैधद्भक्तपातकनाशिनी॥
एलामोदमुखैनोऽद्रिशक्रायुधसमस्थितिः। ईहाशून्येप्सितेशादिसेव्येशानवराङ्गना॥
ईश्वराज्ञापिकेकारभाव्येप्सितफलप्रदा। ईशानेतिहरेक्षेषदरुणाक्षीश्वरेश्वरी॥
ललिता ललनारूपा लयहीना लसत्तनुः। लयसर्वा लयक्षोणिर्लयकर्त्री लयात्मिका॥

लघिमा लघुमध्याढ्या ललमाना लघुद्रुता। हयारूढा हतामित्रा हरकान्ता हरिस्तुता॥
हयग्रीवेष्टदा हालाप्रिया हर्षसमुद्धता। हर्षणा हल्लकाभाङ्गी हस्त्यन्तैश्वर्यदायिनी॥
हलहस्तार्चितपदा हविर्दानप्रसादिनी। रामा रामार्चिता राज्ञी रम्या रवमयी रतिः॥
रक्षिणी रमणी राका रमणीमण्डलप्रिया। रक्षिताखिललोकेशा रक्षोगणनिषूदिनी॥
अम्बान्तकारिण्यम्भोजप्रियान्तकभयङ्करी। अम्बुरूपाम्बुजकराम्बुजजातवरप्रदा॥
अन्तःपूजाप्रियान्तःस्थरूपिण्यन्तर्वचोमयी। अन्तकारातिवामाङ्कस्थितान्तस्सुखरूपिणी॥
सर्वज्ञा सर्वगा सारा समा समसुखा सती। संततिः संतता सोमा सर्वा सांख्या सनातनी ॐ॥

फलश्रुतिः

एतत् ते कथितं राम नाम्नामष्टोत्तरं शतम्। अतिगोप्यमिदं नाम्नः सर्वतः सारमुद्धृतम्॥
एतस्य सदृशं स्तोत्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्। अप्रकाश्यमभक्तानां पुरतो देवताद्विषाम्॥
एतत् सदाशिवो नित्यं पठन्त्यन्ये हरादयः। एतत्प्रभावात् कन्दर्पस्त्रैलोक्यं जयति क्षणात्॥

अथ सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं मनोहरम्। यस्त्रिसंध्यं पठेन्नित्यं न तस्य भुवि दुर्लभम्॥
श्रीविद्योपासनवतामेतदावश्यकं मतम्। सकृदेतत् प्रपठतां नान्यत् कर्म विलुप्यते॥
अपठित्वा स्तोत्रमिदं नित्यं नैमित्तिकं कृतम्। व्यर्थीभवति नग्नेन कृतं कर्म यथा तथा॥
सहस्रनामपाठादावशक्तस्त्वेतदीरयेत्। सहस्रनामपाठस्य फलं शतगुणं भवेत्॥
सहस्रधा पठित्वा तु वीक्षणान्नाशयेद्रिपून्। करवीररक्तपुष्पैर्हुत्वा लोकान् वशं नयेत्॥
स्तम्भयेत् पीतकुसुमैर्नीलैरुच्चाटयेद् रिपून्। मरिचैर्विद्वेषणाय लवङ्गैर्व्याधिनाशने॥
सुवासिनीर्ब्राह्मणान् वा भोजयेद् यस्तु नामभिः। यश्च पुष्पैः फलैर्वापि पूजयेत् प्रतिनामभिः॥
चक्रराजेऽथवान्यत्र स वसेच्छ्रीपुरे चिरम्। यः सदाऽऽवर्तयन्नास्ते नामाष्टशतमुत्तमम्॥
तस्य श्रीललिता राज्ञी प्रसन्ना वाञ्छितप्रदा। एतत्ते कथितं राम शृणु त्वं प्रकृतं ब्रुवे॥

इति श्रीत्रिपुरारहस्ये श्रीसौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥